जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय

27 जुलाई 2020

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया ने यूजीसी के साथ मिलकर जेंडर बायस, स्टीरियोटाइपिंग और जेंडर इक्वैलिटी ' पर वेबिनार आयोजित किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के राजनीति विज्ञान और अंग्रेजी विभाग ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के सहयोग से आज एक वेबिनार का आयोजन किया जिसका शीर्षक जेंडर बायस, स्टीरियोटाइपिंग, और जेंडर इक्वैलिटी'' था।

इस वेबिनार का उद्घाटन जामिया की कुलपति प्रोफेसर नजमा अख्तर ने किया और खुद भी चर्चा में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रो रंजना अग्रवाल (सीएसआईआर और एनआईएसटीएडीएस के निदेशक) और वाशिंगटन विश्वविद्यालय के सेंटर फार हेल्थ एंड सोशल जस्टिस के निदेशक तथा ग्लोबल हेल्थ विभाग के क्लिनिकल एसोसिएट प्रोफेसर डॉ अभिजीत दास, पूर्वाह्न सत्र के 'डिस्ट्रकि्ंटग जेंडर इनीक्वालटी' विषय पर प्रतिष्ठित वक्ता थे।

इस सत्र के अध्यक्ष, जामिया के राजनीति विज्ञान विभाग प्रमुख प्रोफेसर बुलबुल धर-जेम्स ने इस बात पर प्रकाश डाला कि लिंग, महिलाओं और पुरुषों की विविधता की पहचान है। लेकिन यह लिंग की 'बाइनरी' (द्विगुण) समझ तक सीमित नहीं है। इस चिंता की पृष्ठभूमि यह है कि लैंगिक समानता सिर्फ महिलाओं का मुद्दा नहीं है। यह सारा मुद्दा ' मानवाधिकार ' के समग्र ढांचे का हिस्सा है। यह महिलाओं और पुरुषों तथा लड़कियों और लड़कों के समान अधिकारों, जिम्मेदारियों और अवसरों के व्यापक संदर्भ में है। लैंगिक समानता के बिना कोई मानवाधिकार नहीं हो सकता।

प्रो जेम्स ने यह भी कहा कि लिंग को एक विशिष्ट राजनीतिक अर्थव्यवस्था विश्लेषण से देखने की ज़रूरत है, ताकि विश्लेषण को सहभागी और समावेशी बनाया जा सके। यह विशलेषण भी करना होगा कि सत्ता के अदृश्य स्रोत (जैसे सामाजिक मानदंड, सार्वजनिक धारणाएं, संस्थागत संस्कृतियां) विभिन्न हितधारकों की स्थिति को कैसे प्रभावित करती हैं। उन्होंने कहा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन को चलाने के लिए महिलाओं का समर्थन कैसे किया जा सकता है। इसे केवल नए अधिकारों, अवसरों या संसाधनों को पाने में महिलाओं को समर्थ बनाने तक ही सीमित नहीं किया जाए।

प्रोफेसर रंजना ने अपने व्याख्यान, 'जेंडर इक्वेलिटी एंड एम्पावरमेंट फ़ॉर पीस एंड डेवलपमेंट' में प्राचीन से समकालीन भारत तक महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन किया।

डॉ अभिजीत दास ने अपनी प्रस्तुति में भारत में 'पुरुष और मर्दानागी' विषय पर दिलचस्प बातें रखीं। उन्होंने कहा कि इस पुरुषत्व के अहम के चलते - पुरुष और महिलाएं दोनों, पितृसत्तात्मक संबंधों में अंतर्निहित असमानता के कारण पीड़ित हैं। उन्होंने सामुदायिक स्तर पर, सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का पुरूषों द्वारा समर्थन किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

दोपहर बाद के सत्र में 'भारतीय साहित्यः जेंडर स्टीरियोटाइपिंग को ढा रहा है या इसे बनाए रखे हुए है ?' विषय पर चर्चा हुई। इसमें प्रसिद्ध कवि, प्रो स्मिता अग्रवाल, (पूर्व निदेशक, सेंटर फॉर वुमेन स्टडीज़, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

और प्रो भारती हरिशंकर, (एचओडी डिपार्टमेंट ऑफ़ वीमेन स्टडीज़, मद्रास विश्वविद्याल) जैसे दिग्गज शामिल थे। इस वेबिनार के पंजीकरण के लिए लगभग 600 लोगों ने आवेदन किया था लेकिन गूगल मीट प्लेटफार्म की सीमा को देखते हुए 'पहले आओ, पहले पाओ' नियम का पालन किया गया और बच गए लोगों के लिए यू ट्यूब पर इसे लाइव स्ट्रीम किया गया । यह वेबिनार बहुत इंटरैक्टिव और सफल रहा।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक